

## लॉर्ड कर्ज़न

### प्रलम्बिस के लयि:

कर्ज़न गेट, बजिय चंद महताब, बर्दवान एस्टेट, बंगाल वभिाजन ।

### मेन्स के लयि:

कर्ज़न, उनकी वदिश नीत और सुधार ।

## चर्चा में क्यौं?

हाल ही में पश्चिम बंगाल सरकार ने लॉर्ड कर्ज़न गेट के सामने बर्दवान के महाराजा बजिय चंद महताब और उनकी पत्नी राधारानी की मूर्त ललगाने का फैसला कयि है ।

- कर्ज़न के वर्ष 1903 में शहर का दौरा करने के उपलक्ष्य में महताब ने गेट का नरिमाण कराया था ।
- महाराजाधरिज बजिय चंद महताब वर्ष 1887 से 1941 में अपनी मृत्यु तक बरटिश भारत में बर्दवान एस्टेट, बंगाल के शासक थे ।

## लॉर्ड कर्ज़न

- जॉर्ज नथानएल कर्ज़न (11 जनवरी, 1859- 20 मार्च, 1925) का जन्म केडलस्टन हॉल (Kedleston Hall) में हुआ, जो इंग्लैंड के एक्बरटिश राजनेता और वदिश सचवि थे, जनिहोंने अपने कार्यकाल के दौरान बरटिश नीत नरिमाण में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिाई ।
  - लॉर्ड कर्ज़न ने लॉर्ड एलगानि के कार्यकाल के उपरांत पदभार ग्रहण कयि तथा कर्ज़न वर्ष 1899 से 1905 तक बरटिश भारत के वायसराय रहे ।
    - वह 39 वर्ष की आयु में भारत के सबसे कम उमर के वायसराय बने ।
  - कर्ज़न वायसराय पद के सर्वाधिक वदिदासपद और परणामी धारकों में से एक थे ।
- वायसराय के रूप में पदभार ग्रहण करने से पूर्व कर्ज़न ने भारत (चार बार), सीलोन, अफगानस्तान, चीन, पर्शयिा, तुर्कस्तान, जापान और कोरयिा का दौरा कयिा था ।

## कर्ज़न की वदिश नीतयिाँ:

- उत्तर-पश्चिम सीमांत नीतयिः
  - कर्ज़न ने अपने पूर्ववर्तयिाँ शासकों के वपिरीत उत्तर-पश्चिम में बरटिश कब्जे वाले क्षेत्रों के एकीकरण, शक्ति और सुरक्षा की नीतयिाँ अनुसरण करना शुरू कर दयिा ।
  - उन्होंने चत्त्राल को बरटिश नयित्रण में रखा और पेशावर और चत्त्राल को जोड़ने वाली एक सड़क का नरिमाण कयिा, जसिसे चत्त्राल की सुरक्षा की व्यवस्था की गई ।
- अफगान नीतयिः
  - मध्य एशयिा और फारस की खाड़ी क्षेत्र में रूसी वसितार के डर से लॉर्ड कर्ज़न की अफगान नीतयिाँ को राजनीतयिाँ और आर्थिक हतियिाँ से जोड़ा गया था ।
  - शुरुआती दौर से ही अफगानों और अंगरेजों के बीच संबंधों में दरार आ गई थी ।
- पर्शयिा के प्रतयिाँ नीतयिः
  - उस क्षेत्र में बरटिश प्रभाव को सुरक्षित करने के लयि वर्ष 1903 में लॉर्ड कर्ज़न व्यक्तयिाँ रूप से फारस की खाड़ी क्षेत्र में गए और वहाँ बरटिश हतियिाँ की रक्षा हेतु कड़े कदम उठाए ।
- तबिबत के साथ संबंधः
  - लॉर्ड कर्ज़न की तबिबत नीतयिाँ भी इस क्षेत्र में रूसी प्रभुत्व के डर से प्रभावित थी ।
  - लॉर्ड कर्ज़न के प्रयसासों ने इन दोनों के बीच व्यापार संबंधों को पुनरुजिवित कयिा था जसिके तहत तबिबत अंगरेजों को भारी क्षतपूरतयिाँ देने

के लिये सहमत हुआ।

## वभिन्नि क्षेत्रों में सुधार:

### ■ कलकत्ता कॉरपोरेशन एक्ट 1899:

- इस अधिनियम ने नरिवाचति वधायिकाओं की संख्या को कम कर दिया और भारतीयों को स्वशासन से वंचित करने के लिये मनोनीत अधिकारियों की संख्या में वृद्धि की।
- इसके वरिोध में कॉरपोरेशन के 28 सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया और बाद में यह अंग्रेजों और एंग्लो-इंडियन के बहुमत के साथ एक सरकारी विभाग बन गया।

### ■ आर्थिक:

- वर्ष 1899 में ब्रिटिश मुद्रा को भारत में कानूनी नविदि घोषित किया गया और एक पाउंड को 15 रुपए के बराबर घोषित किया गया था।
- कर्ज़न द्वारा नमक-कर की दर को कम किया गया। जिसने नमक-कर की दर को ढाई रुपए प्रतिमन (एक मन लगभग 37 किलो के बराबर) से घटाकर एक-तर्हिाई रुपए प्रतिमन (Maund) कर दिया।
- 500 रुपए से अधिक की वार्षिक आय वाले लोगों ने टैक्स चुकाया। इसके अतिरिक्त आयकर दाताओं को भी छूट मिली।

### ■ अकाल:

- कर्ज़न के भारत आगमन के दौरान भारत में भीषण अकाल की स्थिति थी जिसने दक्षिण, मध्य और पश्चिमी भारत के व्यापक क्षेत्रों को प्रभावित किया। कर्ज़न ने प्रभावित लोगों को यथासंभव राहत सुविधाएँ प्रदान की।
- लोगों को भुगतान के आधार पर काम दिया जाता था और किसानों को राजस्व के भुगतान से छूट दी जाती थी।
- 1900 तक जब अकाल समाप्त हो गया, कर्ज़न ने अकाल के कारणों की जाँच के लिये एक आयोग नियुक्त किया और आयोग ने नविवारक उपायों का सुझाव दिया, जिन्हें बाद में संज्ञान में लाया गया।

### ■ कृषि:

- वर्ष 1904 में सहकारी क्रेडिट सोसायटी अधिनियम पारित किया गया था जिसका उद्देश्य जमा और ऋण के माध्यम से लोगों को सोसायटी निर्माण के लिये प्रेरित करना था, जिसमें मुख्य रूप से कृषक वर्ग को साहूकारों (जो साहूकार आमतौर पर अत्यधिक ब्याज दर वसूलते थे) के चंगुल से बचाने के लिये अपनाया गया था।
- वर्ष 1900 में पंजाब भूमिअलगाव अधिनियम पारित किया गया था, जिसमें किसानों द्वारा उनके ऋणों के भुगतान नहीं किये जाने पर साहूकारों को हस्तांतरित की जाने वाली भूमि पर रोक लगा दी थी।

### ■ रेलवे:

- कर्ज़न ने भारत में रेलवे की सुविधाओं में सुधार करने और रेलवे को सरकार के लिये लाभदायक बनाने का भी फैसला किया।
- रेलवे लाइनों का वसितार किया गया, रेलवे विभाग को समाप्त कर दिया गया और रेलवे के प्रबंधन को लोक निर्माण विभाग से हटा कर तीन सदस्यों वाले रेलवे बोर्ड को सौंप दिया गया।

### ■ शकिषा:

- वर्ष 1901 में, कर्ज़न ने शमिला में एक शकिषा सम्मेलन बुलाया जिसके बाद वर्ष 1902 में विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति की गई।
- आयोग की अनुशंसा पर वर्ष 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया।
- कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और आयोग के एक सदस्य, गुरुदास बनर्जी ने रिपोर्ट में अपनी असहमत विव्यक्त करने के लिये नोट दिया था और भारतीय जनता ने इस अधिनियम का तिरिस्कार किया लेकिन सब कुछ ज़्यादा प्रभावी नहीं रहा।

## बंगाल विभाजन में कर्ज़न की भूमिका:

- वर्ष 1905 में अवभाजति बंगाल प्रेसीडेंसी का विभाजन कर्ज़न के द्वारा लिये गए फैसलों में सबसे आलोचनात्मक था, जिसने न केवल बंगाल में बल्कि पूरे भारत में व्यापक वरिोध को जन्म दिया और स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी।
- लगभग 8 करोड़ लोगों के साथ बंगाल भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला प्रांत था।
- इसमें वर्तमान में पश्चिमी बंगाल, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा और असम के कुछ हिस्सों तथा वर्तमान बांग्लादेश शामिल थे।
- कर्ज़न ने जुलाई 1905 में बंगाल प्रेसीडेंसी के विभाजन की घोषणा की।
  - 3.1 करोड़ की आबादी के साथ 3:2 के अनुपात में हिंदू-मुस्लिम सहित पूर्वी बंगाल और असम के एक नए प्रांत की घोषणा की गई।
  - पश्चिमी बंगाल प्रांत में सर्वाधिक हिंदू थे।

## विभाजन के परिणाम:

- विभाजन ने पूरे भारत में भारी आक्रोश और शतरुता को जन्म दिया तथा कॉंग्रेस के सभी वर्गों (नरमपंथियों और कट्टरपंथियों) ने इसका वरिोध किया।
- इस घटना ने एक संघर्ष को जन्म दिया जिसे स्वदेशी आंदोलन के रूप में जाना जाने लगा जिसका सर्वाधिक प्रभाव बंगाल में था, लेकिन अन्य जगहों पर भी इसका प्रभाव था, उदाहरण के लिये डेल्टाई आंध्र में इसे वंदेमातरम आंदोलन के रूप में जाना जाता था।
  - यह वरिोध ब्रिटिश वस्तुओं (वर्शिष रूप से वस्त्रों) का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिये किया गया था।
- अपनी देशभक्ति को रेखांकित करने और उपनिवेशवादियों को चुनौती देने के लिये वंदे मातरम गाते हुए प्रदर्शनकारियों के साथ वरिोध प्रदर्शन किया।
- रवींद्रनाथ टैगोर ने कई स्थानों पर प्रदर्शन का नेतृत्व किया और उन्होंने कई देशभक्तों के गीतों की रचना की जिसमें सबसे प्रसिद्ध 'अमर सोनार बांग्ला' (माई गोल्डन बंगाल) था, जो अब बांग्लादेश का राष्ट्रगान है।

## वरीध प्रदर्शनों का प्रभाव:

- वर्ष 1905 में करज़न भारत छोड़कर ब्रिटन चले गए, लेकिन यह आंदोलन कई वर्षों तक चलता रहा।
- कंगि जॉर्ज पंचम ने अपने राज्याभषिक दरबार में वर्ष 1911 में बंगाल के वभिजन को नरिसुत कर दिया।
  - वर्ष 1911 में लॉर्ड हार्डगि भारत के वायसराय थे।
- आंदोलन के दौरान स्वदेशी आंदोलन का महत्त्व काफी बढ़ गया था, बाद में यह आंदोलन राष्ट्रव्यापी स्तर पर पहुँच गया।
- बंगाल वभिजन और करज़न के करूर व्यवहार ने राष्ट्रीय आंदोलन और कांग्रेस को एक ज्वलंत आंदोलन की ओर मोड़ दिया।

## प्रलिमिस

स्वदेशी आंदोलन के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2019)

1. इसने स्वदेशी कारीगर शलिप और उद्योगों के पुनरुद्धार में योगदान दिया।
2. स्वदेशी आंदोलन के एक भाग के रूप में राष्ट्रीय शकिषा परषिद की स्थापना की गई थी।

उपरयुक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

Q. 'स्वदेशी' और 'बहषिकार' को पहली बार संघर्ष के तरीकों के रूप में कसिके दौरान अपनाया गया था? (2016)

- (a) बंगाल वभिजन के खलिफ आंदोलन
- (b) होम रूल आंदोलन
- (c) असहयोग आंदोलन
- (d) साइमन कमीशन की भारत यात्रा

उत्तर: (a)

Q. वर्ष 1905 में लॉर्ड करज़न द्वारा कयिा गया बंगाल का वभिजन कब तक बना रहा? (2014)

- (a) प्रथम वशि्व युद्ध तक, जमिं अंगरेजों को भारतीय सैनिकों की आवश्यकता पड़ी और वभिजन समाप्त कयिा गया
- (b) सम्राट जॉर्ज पंचम द्वारा दलि्ली में 1911 के शाही दरबार में करज़न के अधनियम को नरिाकृत कयिा जाने तक
- (c) महात्मा गांधी द्वारा सवनिय अवज्जा आंदोलन आरंभ करने तक
- (d) भारत के 1947 में हुए वभिजन तक, जब पूर्वी बंगाल पूर्वी पाकस्तान बन गया

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- वर्ष 1905 में भारत के वायसराय लॉर्ड करज़न ने प्रशासनिक बोझ को कम करने और बंगाल के पूर्वी क्षेत्र की उपेक्षा के समाधान के बहाने बंगाल को दो भागों पश्चिमी (पश्चिम बंगाल, बहिर और ओडशा को मलिाकर) और पूर्वी (पूर्वी बंगाल और असम) में वभिजति कयिा।
- 1911 में कंगि जॉर्ज पंचम ने अपने राज्याभषिक दरबार में बंगाल वभिजन को नरिसुत कर दिया और इसे भाषाई आधार पर वभिजति करने का नरिणय लयिा। इसलयि ओडशा और बहिर और असम के प्रांत फरि से अस्तित्व में आए। उन्होंने राजधानी को भी कलकत्ता से दलि्ली स्थानांतरति कर दिया।

अतः वकिल्प (b) सही है।

## मेन्स:

Q. लॉर्ड करज़न की नीतयिों और राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन कीजयि। (2020)

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

